28

क्रूस की बड़ी बातें, 1

रोमियों 5:11-21

''और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं'' (रोमियों 5:11)।

''प्रायश्चित''

इतिहास में पवित्र शास्त्र की बुलाहट से बढ़कर चकित करने वाली और कोई बात नहीं है। परमेश्वर हमें क्रूस की गहराई को नापने का न्यौता देता है। जब हम उसे नापते हैं तो अवाक से रह जाते हैं और धन्यवाद से भर जाते हैं।

प्रायश्चित अर्थात परमेश्वर के साथ एक किया जाना, पवित्र शास्त्र के महान विषयों में से एक है। यह एक सच्चाई है, जो मसीहियत को अन्य धर्मों से अलग करती है। एक दिन एक समय पर- यीशु की मृत्यु में-पापी मनुष्य ने परमेश्वर का सनातन प्रेम देखा (यूहन्ना 3:16)।

पाप पवित्रता को भंग करता है और उसे अनदेखा करता है। पाप के कारण मनुष्य ने अपने आप को पवित्र परमेश्वर से दूर कर लिया है। किसी पापी को परमेश्वर के सम्मुख खड़े होने का हक या कोई कारण नहीं है। क्या मनुष्य पाप में बचाया जा सकता है? अगर हां तो कैसे, कब और किसके द्वारा? पाप सब मुश्किलों से बड़ी मुश्किल है, पर यीशु इने हल करने के लिए मरा।

यीशु बचाए हुओं को नहीं, बल्कि खोए हुओं को ढूंढ़ने के लिए आया (लूका 19:10)। कलवरी यकीन से परे प्रकाश है कि परमेश्वर क्षमा करने वाला परमेश्वर है। प्रायश्चित परमेश्वर के प्रेम का उपहार है।

प्रायश्चित हमारी समझ से परे प्रकाश है और हम इसका मूल्य भी नहीं चुका सकते। विश्वास वह भरोसा है, जिसे कभी समझा नहीं जा सकता। अपर्याप्त मूल्य चुका कर स्पष्ट खरीदने से अच्छा है कि उस थियोलॉजी (धर्मशास्त्र) को मान लिया जाए। बिना प्रायश्चित के परमेश्वर के साथ हमारी सच्ची संगति नहीं है। यीशु ने वह दाम चुकाया, जिसका हकदार पाप था। इस कारण पापी क्रूस पर चढ़ाए जाने पर निर्भर करते हैं, अगर पापियों को किसी और तरीके से बचाया जा सकता, तो परमेश्वर अपने इकलौते पुत्र की कुर्बानी देने वाला शैतान होता। यीशु पर दोष लगाने वाले ने अनजाने में बुहत गहरी सच्चाई कही: ''इसने औरों को बचाया, परन्तु अपने को नहीं बचा सकता'' (मरकुस 15:31; देखें लूका 23:35)। हमारे प्रभु का न कोई सानी है और न कोई उसके मुकाबले का है। वह यहूदा का शेर है (प्रकाशितवाक्य 5:5), पर वह परमेश्वर का मेमना भी है। हम शेर को जल्दी पहचान जाते हैं, पर विजय शेर के द्वारा नहीं, बल्कि मेमने के द्वारा आई (1 पतरस

1:18, 19)। मेमने पर सबसे बड़ी शिक्षा प्रकाशितवाक्य में है।[1]

''प्रायश्चित'' शब्द का अर्थ है ''सुधार करना, ठीक करना, गलत मनुष्य को संतुष्ट करना है, प्रायश्चित से संकेत है कि परमेश्वर सही है।'' वह हमारी मुश्किल पाप के बारे में सही है। वह उस हल क्रूस के बारे में सही है। प्रायश्चित तो हीरे की तरह है; हम किसी भी तरह से इसे पूरा नहीं देख सकते। मुख्य गलतियां क्रूस के एक पहलू को दूसरे से अधिक महत्व देने पर ही होती हैं। यीशु क्रूस पर मरा-यह इतिहास है। यीशु मेरे लिए मरा-यह उद्धार है। हमारे लिए यह विश्वास करना और मानना आवश्यक है कि यीशु हम में से हर एक के लिए मरा।

प्रायश्चित तथा धर्मी ठहराना

यह कहा जाता है कि रोमियों की पुस्तक बाइबल का दिल है तथा रोमियों 3:20-26 पुतस्क का दिल है। इन आयतों में पौलुस ने वाक्य का इस्तेमाल ''... ताकि वह स्वयं धर्मी ठहर कर ओरों को धर्मी ठहराए।'' प्रायश्चित का आधार न्याय है। मूल रूप में बाइबल ''धर्मी ठहराना'' तथा ''धार्मिकता'' का एक ही तरह से इस्तेमाल करती है। स्पष्ट है कि न्याय रहित धार्मिकता की शिक्षा नहीं दी जा सकती। परमेश्वर दोषी को धर्मी कैसे ठहरा सकता है? समय और भूल जाने पर पाप खत्म नहीं हो जाता। पाप को फिक्स नहीं किया जा सकता। परमेश्वर भी पाप को निश्चित नहीं करता। पाप का जुर्माना चुकाया जाना आवश्यक है। अत: पाप को दण्ड दिया जाना भी फिक्स है। यीशु ने यह सब कुछ चुका दिया। इस प्रकार के पाप को परमेश्वर का उत्तर क्रूस है।

हमारा समाज इस सच्चाई से ठोकर खाता है (1 कुरिन्थियों 1:22-25)। मनुष्य को यह नज़र नहीं आ सकता कि वह पाप में खोया हुआ है। सर्वमुक्तिवाद की शिक्षा का कहना है, ''परमेश्वर इतना भला है कि वह आपको नरक में नहीं जाने देगा।'' पर पवित्र परमेश्वर पाप को दण्ड दिए बिना नहीं रह सकता। परमेश्वर न्यायी का परमेश्वर है। इस विचार को न मानें कि ''परमेश्वर प्रेम करने वाला है और वह पाप को अनदेखा करेगा!'' दया कभी भी न्याय को धोखा नहीं दे सकती। परमेश्वर जो है, उससे कम कभी भी नहीं हो सकता। न्याय का नियम भावुक प्रेम से कहीं अधिक है, सो न्याय की मांग अनुग्रह ने पूरी कर दी। जो मनुष्य न कर पाया, परमेश्वर ने उसे मनुष्य के पुत्र (यीशु) द्वारा कर दिया।

न्याय बाइबल की शिक्षा का आधार है। क्रूस को मानने का अर्थ है न्याय को मानना तथा नरक को मानना। न्याय (पवित्रता) से अलग होकर प्रेम का कोई अर्थ नहीं रह जाता। न्याय के बिना, अनुग्रह व्यर्थ है। बिना न्याय के क्रूस का कोई उद्देश्य नहीं है। प्रेम तथा पवित्रता साथ-साथ ही चलते हैं। अगर दोष के कारण कोई फर्क नहीं पड़ता तो यीशु का मरना व्यर्थ है। पाप का धोया जाना आवश्यक है-न कि नज़रअंदाज़ करना (1 कुरिन्थियों 6:11)।

यीशु का देह धारण करना, हमें अपने आप में बचा नहीं सकता था। यीशु की सम्पूर्ण शिक्षाएं अपने आप में हमें बचा नहीं सकती थीं। लहू का होना आवश्यक था, ''और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)। मृत्यु आवश्यक थी, ''क्योंकि मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है ...'' (इब्रानियों 9:15-17; देखें 2:9; रोमियों 5:10; कुलुस्सियों 1:22)।

यीशु को प्रेम के कारण ही नहीं, बल्कि प्रेम और न्याय के कारण क्रूस पर ठोंक दिया। परमेश्वर धर्मी है। वह धर्मी ठहराने वाला भी है। परमेश्वर सही है। परमेश्वर ने अनुग्रह के द्वारा

वह उपलब्ध करा दिया, जो मनुष्य अपने धर्म के कामों के द्वारा नहीं पा सकता था। यीशु ने इसीलिए पुकार कर कहा, ''पूरा हुआ है!'' जब वह क्रूस पर मरा, तो उसने वह कर्ज़ उतारा जो उसके सिर नहीं था; मैंने ऐसा कर्ज़ देना था, जिसे मैं चुका नहीं सकता था।[2] यीशु या तो अपने आप को बचा सकता था या हमें बचा सकता था। हमें बचाने के लिए उसने अपने आप को दे दिया। मनुष्य का न्याय करने वाला मनुष्य का उद्धारकर्त्ता बन गया (यूहन्ना 5:22-27)।

इस कारण उद्धार का आरम्भ व अन्त दोनों धर्मी ठहराए जाने से होते हैं। मसीही में हमें धर्मी ठहराया जाता है। हमने पाप किया है, पर परमेश्वर ने हमें क्षमा कर दिया है। परमेश्वर का न्याय हमारे इतना उलट है कि मसीही लोग भी चकित रह जाते हैं!

प्रायश्चित तथा विकल्प

कलवरी पर बीच वाला क्रूस यीशु का नहीं था, बल्कि यह आप का और मेरा था। उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना दूसरे की जगह प्रतीकात्मक तथा विकल्प के रूप में था। यीशु ने वह मृत्यु ले ली, जो आपको और मुझे मिलनी थी; और जब हम उसके पास आते तथा उसमें बने रहते हैं तो हम वह क्षमा प्राप्त करते हैं, जो उसने उपलब्ध कराई है। बिना विकल्प के क्रूस एक साहसी मनुष्य की कहानी है, जो ख़तरनाक मौत मरा। हम अपने आप को बचा नहीं सकते, यदि हम बचाए जाते हैं, जो किसी और को हमें बचाना होगा।

मैंने अपने उद्धार में क्या योगदान दिया? अपने आप का! हमने जो कुछ होना था उसका विकल्प यीशु है। परमेश्वर का पुत्र बना ताकि मनुष्य के पुत्रों को परमेश्वर के पुत्र बना सके। मसीह का लहू पहले हमारे लिए दिया गया, और फिर हर रोज़ हमें दिया जाता है।

क्या एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के दु:ख तथा बलिदान से फायदा ले सकता है? हां! जीवन स्वयं विकल्प की एक धारणा से भरा हुआ है। यह तर्कसंगत, वैध तथा लाभकारी है। पुराने नियम की कुर्बानी के प्रबन्ध से हमें इस गहरी सच्चाई का पता चलता है। ''बलि का बकरा'' स्पष्ट उदाहरण है। खूबसूरत अध्याय यशायाह 53 से विकल्प की गहराई का पता चलता है। उस वचन का सार बलिदान है। यीशु संसार की नींव रखने से पहले अकुर्बान किया हुआ मेमना है (प्रकाशितवाक्य 13:8)। पूरी बाइबल में इस विकल्प की पुष्टि की गई है।[3] यीशु को पाप बनाया गया था। वह हमारे लिए पाप बना। जितना अन्याय तथा न्याय क्रूस पर हुआ उतना कहीं नहीं हुआ।

अधर्मियों को धर्मी कैसे बनाया जा सकता है? (देखें रोमियों 3:25, 26; KJV; फिलिप्पियों 3:9; याकूब 2:23)। कोई अपने आप को धर्मी घोषित नहीं कर सकता (रोमियों 3:9, 10, 20)। अपने आप को धर्मी ठहराना असम्भव है। धर्मी ठहराने वाला परमेश्वर ही है (रोमियों 8:33), और वह यह काम मुफ़्त में करता है (रोमियों 3:24)। यह एक दान है। दान के लिए देने वाला तथा लेने वाला दोनों आवश्यक हैं। दान तब तक दान नहीं कहलाता जब तक लिया न जाए। इसके अलावा दान तब तक दान नहीं है जब तक उसका इस्तेमाल न किया जाए। हमारी समस्या पाप ही है। हमारे विकल्प के रूप में यीशु ही अकेला है, जो हमारे लिए धार्मिकता उपलब्ध करवा सकता है।

परमेश्वर पाप को अनदेखा नहीं करता और न ही उसे अस्वीकार करता है। उसने हमारा पाप अपने ऊपर ले लिया और अपने आप को दण्ड दे दिया। परमेश्वर की पवित्रता को सम्मानित किया गया, हमारे पाप को दण्ड दिया गया तथा हम में से जितनों ने उसकी आज्ञा मानी, उन्हें छुड़ाया गया

है। परमेश्वर ने छुड़ाए हुए लोगों को धर्मी घोषित किया है। यह कानूनी (वैध) घोषणा है। यह ''सही धार्मिकता'' है।

इस प्रक्रिया में परमेश्वर बुरे लोगों को अच्छा या दुष्टों को पवित्र नहीं कर रहा था। मसीही लोग विश्वासी हैं, पर सिद्ध नहीं। हमारे ऊपर परीक्षा आती है तथा हम में पाप है अर्थात हम अनुग्रह से वंचित हो जाते हैं (रोमियों 3:9-12)। मसीही लोग अभी भी संसार में, समय में तथा देह में रहते हैं। पौलुस ने कहा देह में कोई भी भलाई वास नहीं करती (रोमियों 7:18)। मसीही लोगों की लड़ाई ... शैतान, पाप तथा अपने विरुद्ध है, परन्तु मसीह लोग जो रोशनी में चल रहे हैं, लगातार उसके लहू के द्वारा धोए जाते हैं (1 यूहन्ना 1:7)। परमेश्वर मसीही लोगों को कानूनी तौर पर धर्मी, अर्थात तोड़े गए नियम की किसी भी ज़िम्मेदारी से उद्धार की घोषणा करता है, क्योंकि अपने पुत्र में उसने खुद हर्जाना चुका दिया है। हमें मसीह में बपतिस्मा लेने के द्वारा मसीह को पहनाया गया है (रोमयों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27)। ''धर्मी ठहराए जाने'' पर हमारी अपनी स्थिति ही नहीं बदलती, बल्कि धीरे-धीरे हमारा स्वभाव वह सब ग्रहण कर लेता है, जो अनुग्रह की ओर से पेश किया जाता है।

प्रायश्चित के बिना धर्मी नहीं ठहराया जा सकता। आज्ञाकारी विश्वास को वह मिलता है जिसे अनुग्रह के द्वारा सेंत मेंत दिया जाता है। क्रूस परमेश्वर का गहरा भेद है, अर्थात वह प्रेम है, जो हमारी समझ से कहीं ऊपर है। वास्तविकता में परमेश्वर ऐसा नहीं है, जिसे हम समझ सकें पर उस पर भरोसा कर सकते हैं।

मसीहियत के आलोचक विकल्प से परहेज़ करते हैं, क्योंकि विकल्प के साथ बलिदान की बात बढ़कर नज़र आती है। पर बाइबल के धर्म में पूरी धारणा बलिदान पर ही आधारित है। उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक परमेश्वर ने ठहराया है कि पाप के लिए बलिदान दिया जाए। यीशु को केवल अच्छा गुरु, परोपकारी या केवल मनुष्य कहना गलत होगा, क्योंकि वह तो हमारा बलिदान है। परमेश्वर मेल करवाने वाला तथा मेल किया हुआ भी है। यीशु मनुष्य जाति का विकल्प है। उसने किसी जानवर को नहीं बल्कि अपने आप को पेश किया। इब्रानियों की पुस्तक यीशु को विलक्षण याजक तथा बलिदान के रूप में प्रकट करती है। एक लेखक ने कहा है, ''मसीह एक याजक के रूप में हमें हमारे पापों के बलिदान के रूप में अपने आप को पेश करके हमें बचाता है।''[14] पुराने नियम में परमेश्वर ने इस्राएलियों के मिस्र में से निकलने की तैयारी करने के समय हर परिवार को बचाने के लिए उसके दरवाज़े की चौखटों पर लहू देखना था (निर्गमन 12:13)। परमेश्वर के द्वारा प्रत्येक बचाया गया व्यक्ति परमेश्वर के लिए खरीदा हुआ है। हमारी देहें, सृष्टि के द्वारा, छुटकारे के द्वारा तथा पवित्र आत्मा के द्वारा तीनों तरह से परमेश्वर की हैं।[5]

प्रायश्चित तथा गोद लेना

हमारी सेवकाई में मां-बाप को कोई बच्चा गोद लेने में मदद देना *सबसे रोमांचकारी* है। गोद लिए जाने के दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर होने के बाद हम सब सोचते हैं, ''यह बच्चा यह नहीं जानता कि वह कितना भाग्यशाली है।'' गोद लिए जाने की अराधना मसीहियत का उपेक्षित पहलू है। हम इस विषय का अध्ययन या इस पर चर्चा कभी नहीं करते।

आइए अब विषय को बदलते हुए हम पवित्र आत्मा तथा हमारे गोद लिए जाने में उसके

योगदान की बात करते हैं। शुरू करते हुए, याद रखें कि मसीही बनने के लिए हम नये सिरे से जल और आत्मा से जन्म लेते हैं (यूहन्ना 3:3-7)। आत्मा की अगुआई में हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं। वह गोद लिए जाने का आत्मा है। वह हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है (रोमियों 8:14-18)। यह हमें ''मसीह के साथ साझा वारिस'' बना देता है। परमेश्वर को बच्चों की आवश्यकता है, दासों की नहीं। परमेश्वर जो पुराने नियम में दूरी पर बना रहा अब एक मसीही के लिए, ''अब्बा अर्थात पिता'' है! यह सच्चाई हमारी समझ से परे है! छुटकारा गोद लिए जाने को सम्भव बना देता है। परमेश्वर की सन्तान को प्रतिज्ञा दी गई है कि उसके दिल से पवित्र आत्मा ''हे अब्बा, हे पिता'' पुकारता है (गलातियों 4:4-7)।

फज़ल अजीब! अनुग्रह के साथ परमेश्वर ने यीशु के द्वारा हमारा गोद लिया जाना सुनिश्चित कर दिया। परमेश्वर ने अपने प्रिय अर्थात यीशु में हमें ग्रहण कर लिया है। उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिलता है। उद्धार के लिए सुसमाचार की बात मानने पर हमें प्रतिज्ञा के पवित्र आत्मा के साथ मोहर किया गया है (इफिसियों 1:3-14)। बाइबल में यह आयत ''मुकुट का हीरा'' है। इसी में हमारे विश्वास का आधार है। यूहन्ना ने कहा कि ''हम परमेश्वर के पुत्र हैं'' (1 यूहन्ना 3:1, 2)। कितना गम्भीर विचार है! कितनी आशीष है! इसमें हम स्वतन्त्र तथा पुत्र होने की रोमी अवधारणा को देखते हैं। स्वतन्त्र किए गए! गोद लिए गए। परमेश्वर का धन्यवाद हो! मसीह का दावा करना अर्थात छुटकारे का दावा करना। अकेले हम जीवन की लड़ाई लड़ने के अयोग्य हैं। परमेश्वर वह करता है, जो हम नहीं कर सकते। इसलिए हम वह हो सकते हैं, जो हम सोचने की हिम्मत नहीं कर सकते।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणियां

[1]देखें प्रकाशितवाक्य 5:6, 12, 13; 6:16; 7:9, 10, 14; 12:11; 13:8; 14:1, 4; 21:9; 22:1, 3. [2]लेखक अज्ञात ''ही पेड ए डैट'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संकलन तथा संपादन आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [3]देखें रोमियों 5:5-10; इफिसियों 1:3-13; फिलिप्पियों 3:7-10; इब्रानियों 2:9, 14-17; 7:25; 9:28; 10:10; 12:1, 2; 1 पतरस 2:24; 1 यूहन्ना 2:1, 2. [4]चार्ल्स हॉज *सिस्टेमैटिक थियोलॉजी,* अंक 2 (न्यू यॉर्क: स्क्रिब्नर; आर्मस्ट्रांग एंड कं., 1876), 555. [5]मसीही व्यक्ति के दिल में जीने का परमेश्वर का ढंग (देखें रोमियों 8:9-11; 1 कुरिन्थियों 6:19, 20)।